सांस्कृतिक कला 'जात्रा' के कलाकार आशीष चक्रवर्ती से डॉ. जयराम कुमार पासवान की बातचीत

*'**जात्रा**' पश्चिम बंगाल का सांस्कृतिक धरोहर है। पुराने समय में 'जात्रा' से जुड़े कलाकारों को बांग्ला सिनेमा में अभिनय के लिए प्राथामिकता दी जाती थी। उत्पल दत्त, शिवदास मुखर्जी, अनादी चक्रवर्ती, गौतम साधु खाँ, गुरूदास भारा, अभय हलदार, वीनादास गुप्ता जैसे बांग्ला फिल्मों के प्रसिद्ध कलाकार भी 'जात्रा' से जुड़े रहे है। दुर्भाग्यवश आज ऐसी स्थिति नहीं है। **यहां प्रस्तुत है 'जात्रा' के एक ऐसे ही कलाकार श्री आशीष चक्रवर्ती से डॉ. जयराम कुमार पासवान की बातचीत ..***

आशीष चक्रवर्ती,

बेलटुकरी (Beltukukori) बाकुड़ा, पश्चिम बंगाल के रहने वाले हैं। पेशे से जे.के. नगर हाई स्कूल में सहायक अध्यापक के रूप अभी कार्यरत हैं। 'जात्रा' कला से बचपन से ही जुड़े रहे हैं ।

डॉ. जयराम कुमार पासवान,

हिंदी विभाग, टी. डी. बी . कॉलेज, रानीगंज, पश्चिम बंगाल में सहायक प्राध्यापक हैं।

जयराम कुमार - *आप 'जात्रा' से कब जुड़े ?*

आशीष चक्रवर्ती - पारिवारिक परिवेष जात्रा का घर में पहले से था। यही कारण रहा कि (अभिनय/नाटक/जात्रा निर्देशक/संपादक) अभिनेता बनने का शौख पहले से था। पहली बार 16 वर्ष की आयु में 65 वर्ष का वृद्ध नौकर का अभिनय करने के कारण उस समय निर्णायक मंडल के तरफ से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था और साथ ही अभिनय के क्षेत्र में उन्दा कार्य के लिए 'शेरा' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। भविष्य में मेरी इच्छा है कि निर्देशक और पूर्णरूप से जात्रा और नाटक में अभिनय करने का। जात्रा के माध्यम से समाज में चेतना जागृत करना भी मेरा मकसद है साथ ही यह पेशा संपूर्णरूप से अपेशादार अर्थात बिना किसी भुगतान के यह पूरा कार्य किया जाता है। अभी कुछ जात्रा का निर्देशन का भी कार्य कर रहा हूं।

जयराम कुमार – *' जात्रा' क्या है ? इसके संबंध में विस्तारपूर्वक बताएं।*

आशीष चक्रवर्ती - पश्चिम बंगाल, ग्राम बांग्ला की लोकसंस्कृति और साहित्य को आगे बढ़ाने का कार्य ही 'जात्रा' है। बंगाल की लोकसंस्कृति में 'जात्रा' एक विशिष्ट शिल्पधारा है। इसके माध्यम से समाज में लोगों को जागृत करने के साथ-साथ शिक्षा भी प्रदान करती है। 'ठाकुर रामकृष्णा' ने कहा है – ''जात्रा' – थियेटर में लोक शिक्षा होता है।' 'जात्रा' का अभिनय मुख्य रूप से रात्रि के समय में ही होता है। इसका समय लगभग 3 से 4 घंटे का होता है, किंतु पहले 6 से 7 घण्टे तक 'जात्रा' का अभिनय किया जाता था। 'जात्रा' का मंच तीनों

दिशाओं से खुला होता है। ताकि वहां पर उपस्थित दर्शक तीनों तरफ से आसानी से देख सकें। 'जात्रा' का स्टेज पूर्णरूप से अस्थायी होता है ताकि गांव के गरीब से गरीब लोग इससे जुड़ सके और अभिनय भी। 'जात्रा' में दर्शकों की संख्या अमूमन हजार से दस हजार या उससे भी अधिक होती है जिसमें शिक्षित, अशिक्षित सभी प्रकार के दर्शक होते हैं। प्रकाश का प्रभाव उसमें ज्यादा से ज्यादा होता है। कलाकार को काफी मेकऑप भी किया जाता है एवं कलाकार 'जात्रा' में जोर – जोर से अपनी संवाद करता है तकि दूर-दूर तक बैठे दर्शक 'जात्रा' के हरेक कलाकर को देख पाये और उनकी आवाज़ को आसानी से सुन सकें। पहले 'जात्रा' में गीत बहुत अधिक हुआ करता था। 'जात्रा' की भाषा काफी सरल, सहज होता है। इसका उद्देश्य ही मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा प्रदान करना है। 'जात्रा' एक अलग शैली है जो उनका अपना है। 'जात्रा' पाला का प्रचलन काफी पुराना रहा है। 8 वीं शताब्दी में 'पाला गीत' और 'जात्रा' पाला का अभिनय होता था। श्री चैतन्य के अभिर्भाव से पहले भी राढ़, बंग, गौड़, समतट और हरिकेल विभिन्न प्रांतों में 'जात्रा' पाला का अभिनय होता था। आचार्य भरतमूनि के नाट्यशास्त्र से यह जाना जाता है कि प्रेक्षागृह के साथ मुक्तांगन (Open Stage) में भी अभिनय होता था। मुक्तांगन से शुरू होकर ही वह धारा विर्वतन से 'जात्रा' धारा का मार्ग प्रर्दशन करती है। पहले 'जात्रा' का अभिनय देवमंदिर के सामने ही नाट्य मंदिर के निर्माण से शुरू हुआ। 'सारदा तन्य - भाव प्रकाशनम:' में वृर्ताकार स्टेज का वर्णन है। इसी प्रकार धीरे-धीरे अभिनय से 'जात्रा' का अभिनय की शुरूआत हुई। जई-धातु से 'इ' धातु से निष्पण होकर ही 'ई' धातु बना जिसका अर्थ है – 'गमन'। जगरनाथ देव का रथ जात्रा, बुद्ध जात्रा, रास जात्रा और कृष्ण का दोल जात्रा इत्यादि। उस समय मंदिर से देवमूर्ति को लेकर जनसाधारण लोक नृत्य, गीत के साथ लोग सजधजकर नगर की परिक्रमा करते थें। देवता के साथ लोगों का गमन ही 'जात्रा' कहलाता था। इसके पश्चात् नगर के परिक्रमण न करके बल्कि एक स्थान (देवता का नाट्य मंडप) पर ईश्वर की मूर्ति को रखकर चारों तरफ से वृर्ताकार में बैठकर देवता के महत्व का प्रचार करना ही पाला गान कहलाता था। पाला गान से ही पांचाली आया जिसका अर्थ है – शरीर का पांच अंग जिसके द्वारा अभिनय होता है। उससे ही लोकप्रिय 'जात्रा' गान का उद्भव हुआ। 18 वीं शताब्दी में वीरभूम जिला के केंदू विलव, शीशुराम को 'जात्रा' का जनक माना जाता है। 19 वीं शताब्दी से पहले 'जात्रा' में एक बहुत बड़ा बदलाव आया जहां देवता को आधार बनाकर 'जात्रा' पाला किया जाता था। किंतु 19 वीं शताब्दी में मानव को आधार बनाकर 'जात्रा' पाला की रचना शुरू हुई। 'विद्या सुंदर पाला' एवं 'गोपाल उड़े' का नाम उस समय बहुत विख्यात हुआ था। वर्ष 1960 में 'जात्रा' की लोकप्रियता चरम सीमा पर थी। वर्तमान समय में 'जात्रा' का शिल्प और विषय काफी परिवर्तित हुआ है। पेशादार (जो पैसे लेकर जात्रा करते हैं) और अपेशादार (जो पैसे लेकर जात्रा नहीं करते हैं) सभी दलों ने 'जात्रा' की उन्नति करने के प्रयास में परिश्रम कर रहें है। पश्चिम बंगाल में 'जात्रा' का औदा काफी बड़ा है यही कारण है कि इसमें अभी तक कोई गंदगी नहीं आया और आज भी लोग सपरिवार जात्रा देखने आते हैं।

जयराम कुमार पासवान - *सिनेमा और नाटक से जात्रा क्या अलग है?*

आशीष चक्रवर्ती - सिनेमा, जात्रा और नाटक तीनों अभिनय निर्मित कला है। तीनों के आपस में काफी मेल भी है और पृथकता भी। जात्रा एक लोकसंस्कृति है। किंतु सिनेमा लोकसंस्कृति नहीं है। जात्रा को चाहने वाले ज्यादातर लोग ग्रामीण परिवेश के होते है किन्तु सिनेमा की स्थिति भिन्न है। 'जात्रा' के अभिनय को दर्शक सामने से देख सकते है परन्तु सिनेमा में ऐसा सम्भव नहीं है। 'जात्रा' में अभिनय के दौरान अभिनेता को रिटेक की सम्भावना बिल्कुल नहीं मिलता है, परन्तु सिनेमा में यह सम्भव है। 'जात्रा' के लिए Rostrum (रंगशीर्ष) का प्रयोग होता है किन्तु सिनेमा इससे भिन्न है। 'जात्रा' का अभिनय एक ही स्थान पर होता है। परन्तु सिनेमा में दृश्य अभिनय का स्थान बदलता रहता है। नाटक के लिए स्थान निर्धारित होता है, परन्तु 'जात्रा' के लिए स्थान निश्चित नहीं होता है। जात्रा के लिए कोई सेट नहीं होता। परन्तु नाटक के लिए सेट निर्धारित होता है। प्रोपटी का प्रयोग नाटक में ज्यादा होता है, किंतु 'जात्रा' में नहीं। 'जात्रा' ज्यादातर रात में किया जाता है और इसके दर्शक भी जनसाधारण लोग ही होते हैं। परन्तु नाटक का दर्शक ज्यादातर शिक्षित वर्ग ही होते है। 'जात्रा' की भाषा काफी सरल, सहज है, परन्तु नाटक की भाषा थोड़ा कठीन होता है।

जयराम कुमार *- पश्चिम बंगाल के अलावा 'जात्रा' और किस राज्यों में खेला जाता है ?*
आशीष चक्रवर्ती - 'जात्रा' पश्चिम बंगाल के अलावा उड़िसा, बिहार, झारखंड, त्रिपुरा और बांगलादेश में खेला जाता है।

जयराम कुमार *- यूनेस्कों द्वारा अभी तक 'जात्रा' को सांस्कृतिक धरोहर का दर्जा न देने का आप क्या कारण मानते है ?*
आशीष चक्रवर्ती - यह काफी आश्चर्य की बात है कि राज्य सरकार से लेकर केन्द्र सरकार 'जात्रा' जैसे सांस्कृतिक धरोहर को लेकर इतनी सजग क्यों नहीं है? सरकार को चाहिए कि इस गंभीर विषय को सदर तक पहुंचाये ताकि 'जात्रा' को सांस्कृतिक धरोहर का दर्जा मिल सके। इसके साथ ही 'जात्रा' के प्रमुख मंडली (अभिनेता) को भी प्रमुखता से आवाज उठाने की जरुरत है और यह सभी के प्रयास से ही यह सम्भव हो पायेगा। मैं आशा करता हूं कि शीध्र ही यूनेस्कों यह दर्जा देगी।

जयराम कुमार *- आपको क्या लगता है वर्तमान समय में पश्चिम बंगाल में 'जात्रा' का भविष्य है ?*
आशीष चक्रवर्ती - बिल्कुल, पश्चिम बंगाल में 'जात्रा' का भविष्य काफी उज्ज्वल है। आज 'जात्रा' के साथ शिक्षित, प्रबुद्ध जन, युवा, युवतियां अपना पेशा बनाकर इससे ज्यादा से ज्यादा जुड़ रहे हैं। अभी सरकारी एवं गैरसरकारी संस्थाओं ने भी 'जात्रा' शिल्प को विभिन्न प्रकार का प्रशिक्षिण देना शुरू किया है। पश्चिम बंगाल के लोगों ने भी इस कदम का भरपूर सहयोग दिया है।

जयराम कुमार *- मशहूर कलाकार 'माखनलाल नट्टा' ने एक इंटरव्यू में कहा था कि 'जात्रा की जड़े चैतन्य महाप्रभु के पाला गीतों (भक्ति नाटकों के साथ गाए जाने वाले गीतों) में है।' इससे आप कितना सहमत है?*

आशीष चक्रवर्ती -- बिल्कुल, 'माखनलाल नट्टा' का कथन सत्य है। चैतन्य के शिष्य चन्द्रशेखर के घर पर उनके सभी भक्त शिष्यों के साथ चैतन्य महाप्रभु ने कृष्णलीला ('जात्रा') का अभिनय किया करते थे। श्रीवास आचार्य के घर पर भी उन्होंने कृष्णलीला पाला गान किया करते थे। चैतन्य महाप्रभु ने अपने शिष्यों को पाला गीतों को करने में हमेशा उत्साह वर्धन किया करते थें।

जयराम कुमार - *'पाला गीतों' के संबंध में कुछ बताएं।*

आशीष चक्रवर्ती - पाला गीत मुख्य रूप से देव 'जात्रा' के समय हुआ करता था। धीरे-धीरे पाला गीत 'पांचाली' (पांच अंग पाला शैली) चंड़ी जात्रा, राम जात्रा और मनसा का भाषाण जात्रा एवं पाला गीत प्रचलित था। जात्रा पाला में गीत गाने के लिए एक विवेक (शिक्षित व्यक्ति) होता था। ग्रीक नाटक में कोरस की तरह एक विवेक (शिक्षित व्यक्ति) होता था। पाला गीतों में पहले कोई बाहर से आकर दर्शकों को हंसाने का कार्य करता था। वह अपने अंग-भंग के माध्याम से जनता को हंसाता था। पाला गीतों में गाने की संख्या अधिक हुआ करता था। किंतु आज इसका स्वरूप बदल गया है।

जयराम कुमार - *'जात्रा' पर बांग्लादेश दावा ढोंक रहा है कि यह हमारे देश का लोकप्रिय नाट्यशैली है। यही कारण है कि साल 2015 में बांग्लादेश ने 'जात्रा' के उद्भव के पीछे का ऐतिहासिक साक्ष्य पर अपना दावा कर रही है..... इस संबंध में आपकी क्या राय है ?*

आशीष चक्रवर्ती - देश विभाजन से पहले बांगलादेश भारत का हिस्सा हुआ करता था। बांग्ला भाषी क्षेत्र को बंगाल (बांग्ला) कहा जाता था। किंतु 'जात्रा' का उद्भव देश विभाजन से पहले ही हो चुका था। 'जात्रा' प्रेणेता महाप्रभु चैतन्य का जन्म पश्चिम बंगाल के नदिया जिला के नवदीप में हुआ था। उनके द्वारा ही 'जात्रा' का प्रदुभाव हुआ। वहीं 'जात्रा' के जनक कहे जाने वाले 'शीशुराम अधिकारी' भी पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिला के रहने वाले थे फिर भी बांग्लादेश क्यों इसप्रकार का अपना दावा ढोंक रही है ? यह आश्चर्यजनक है।

जयराम कुमार - *आज जिस प्रकार से थियेटर के प्रति लोगों का रूझान घटा है, तो क्या 'जात्रा' को लेकर भी ऐसी स्थिति है?*

आशीष चक्रवर्ती - ऐसा नहीं है, बल्कि यह कहा जा सकता है कि साधारण लोगों का रूझान 'जात्रा' के प्रति और अधिक हुआ है।

जयराम कुमार - आज के सिनेमा में जन सामान्य के साथ-साथ उनकी समस्या एवं संघर्ष लुप्त होता जा रहा है। क्या 'जात्रा' से भी जन साधारण की समस्या एवं उनका संघर्ष गायब हुआ है?

आशीष चक्रवर्ती - यह कुछ अंश तक सही माना जा सकता है, परन्तु पहले 'जात्रा' में साधारण जनता की समस्याएं एवं उनका संधर्ष अधिक था। किंतु वर्तमान में कुछ कम हुआ है। परन्तु पूरी तरह से लुप्त नहीं हुआ है। अभी भी जन सामान्य की समस्या 'जात्रा' में अभिव्यक्ति पाती है।

जयराम कुमार *- 'जात्रा' के लिए क्या आप लोगों को किसी तरह का सरकारी अनुदान मिलता है?*

आशीष चक्रवर्ती - हाँ, 'जात्रा' के उन्नति के लिए राज्य सरकार प्रतिबंध है। पश्चिम बंगाल सरकार ने कलकता के बाग बाज़ार में 'बांग जात्रा ऐकाडमी' एवं 'फणीभूषण विद्या विनोद जात्रा मंच' प्रतिवर्ष यहां 'जात्रा' उत्सव करती है एवं साथ में उससे जुड़े अभिनेताओं के कला कौशल को पुररूस्कृत भी करती है। पश्चिम बंगाल सरकार ने 'जात्रा' कला की उन्नति के लिए कुछ प्रकल्प भी लिये है। जैसे – शिल्पी (Artist) के लिए स्वास्थ्य वीमा योजना की व्यवस्था भी किया गया है। आर्थिक अनुदान के लिए राज्य सरकार ने भत्ता की भी व्यवस्था कर रही है। साल 2015 से राज्य सरकार की तरफ से दुस्त (गरीब और आर्थिक रूप से कमजोर) लोगों के लिए जो भत्ता दिया जाता था वह बढाया गया है।

जयराम कुमार *- पहले 'जात्रा' में पुरूष कलाकार ही महिला चरित्रों का भी अभिनय किया करते थे। क्या आज भी ऐसा ही है?*

आशीष चक्रवर्ती – जी नहीं, 19 वीं शताब्दी से महिला कलाकार 'जात्रा' में अभिनय करना शुरू की। शुरूआती दौर में वही महिला 'जात्रा' में अभिनय करती थी जो प्रमुख रूप से देह व्यापार से जुड़ी थी। किंतु कुछ समय पश्चात् 'जात्रा' से अभिजात्य वर्ग की महिलाएं जुड़ना शुरू हो गयी और महिला कलाकारों की भूमिका वही निभाती थी। किन्तु उस समय चपल बहादुड़ी नाम का पुरुष कलाकार महिला के चरित्र को इतनी संजीदा ढंग से करता था कि लोगों के बीच में वह चपल रानी के नाम से विख्यात हो गया। प्रथम महिला शिल्पी (कलाकार) 'ज्योतषना दत्त' ने 'जात्रा' में अभिनय किया था। वर्तमान समय में 'जात्रा' में महिला कलाकारों की भूमिका महिला ही कर रही है।

जयराम कुमार *- 'जात्रा' के संबंध में 'शिउली भट्टाचार्य' ने एक इंटरव्यू में कहा है, कि बांग्ला सिनेमा में अभिनय के लिए 'जात्रा' के कलाकारों को प्राथामिकता दी जाती थी। क्या आज भी ऐसा है?*

आशीष चक्रवर्ती - वर्तमान समय में 'जात्रा' के कलाकार सिनेमा में काम कर रहे है, ठीक उसीप्रकार सिनेमा के कलाकार भी 'जात्रा' में काम कर रहे है। लेकिन 'शिउली भट्टाचार्य' के 'जात्रा' के अभिनेता को लेकर प्राथामिकता देने की बात से मैं सहमत नहीं हूं। मुझे जो आज लगता है कि बांग्ला के ज्यादातर कलाकार (शिल्पी) को सिनेमा के क्षेत्र में आज उवहेलना का शिकार होना पड़ रहा है। यह दुखद है।

जयराम कुमार *- आज जो प्रमुखता से 'जात्रा' को अपना जीवन का आधार बनाकर अभिनय कर रहे है। वैसे समूह मंडली का नाम बताएं।*

आशीष चक्रवर्ती - आज जो प्रमुखता से 'जात्रा' कर रहे वैसे समूह मंडली हैं..... नट्कम्पनी, लोकनाट्य, दिगविजयी ऑपेरा, विश्वजयी ऑपेरा, मुक्तामंजरी, अग्रागामनी, भैरव ऑपेरा एवं सत्रीर्थ जात्रा समाज आदि।

**** इस बातचीत को संभव बनाने में 'जात्रा' के कलाकार 'श्री नटवर चक्रवर्ती' ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इसके लिए हम उनके प्रति आंतरिक कृतज्ञता ज्ञापित करते है।***